तुम्हारा सबसे, जो पहले मिलते हैं आदि सनातन देवी–देवता वाले, उनके सबसे पीछे पुराना हो जाते हैं। तो इसीलिए ये बीमारी वगैरह–2 बहुत हैं यहाँ इंडिया में। भूख वगैरह सब यहाँ है जास्ती और लॉ मुजीब। दुनिया इन बातों को नहीं जानती है, तुम जानते हो; क्योंकि पुरानी है इसलिए यहाँ फैमिन भी, दुःख भी, मकान भी, सब पुराना। ये जो नए–2 बिल्डिंग्स बने हैं, इनको तुम लोग ऐसे मत समझना– ये कोई नई बन रही हैं या वहाँ का गवर्मेण्ट हाउस जो दिल्ली का है, जो लॉर्ड कर्ज़न ने आ करके बनाया था, तो इसलिए ये कोई नई दिल्ली हो गई। नहीं, ये तो मकान पुराना बनते हैं तो नई बनाएँगे। जैसे जिसका फैशन। अब विलायत में फैशन बहुत है, तो यहाँ भी ऐसे ही बनाना पड़ता है। बाकी उन लोगों ने नाम रख दिया है– वो न्यू दिल्ली, वो ओल्ड दिल्ली। दिल्ली तो एक है ना, सिर्फ ज्ञान– नया मकान बना है। उनको न्यू दिल्ली तो उनको ओल्ड दिल्ली रखते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे न्यू वर्ल्ड की न्यू दिल्ली है, ये ओल्ड वर्ल्ड की ओल्ड दिल्ली है। ऐसे नहीं कहेंगे। अच्छा, इनके लिए तुम क्या–2 भाड़ा है कुछ? क्या मूल्य देते हो? माला बनाते हैं। दीपमाला देखो यहाँ बहुत कम होते हैं; क्योंकि दीपमाला, जो व्यापारी होते हैं, वो तो अपने ही घर में ज़रूर मनाते हैं। वो पूजा वगैरह लक्ष्मी की करते हैं। भले अगर दो भाई होंगे, तो भी वो जो लक्ष्मी की पूजा होती है ना, वो एक भाई समझेंगे क्या पूजा करनी है; परन्तु दूसरा भाई अगर होगा, बोलेगा– कथा ज़रूर करनी होगी। तो वो टाँग छिपानी पड़ती है, जो रसम–रिवाज़ को पकड़ लेना पड़ता है। नहीं तो फिर कुछ हो जाएगा ना, फिर बोलेगा– देखो दीपमाला, अगर लक्ष्मी को नहीं बुलाया, घाटा पड़ गया, धन नहीं आया, फलाना नहीं आया। अभी वो संशय तो अपने पास तो हैं नहीं कोई प्रकार के, कुछ भी नहीं। अपनी कमाई है सच्ची। बाप से ले रहे हैं। सारा अटेन्शन ही उस तरफ में है। काम करते रहें, धंधा भी करते रहें पेट के लिए। इतनी हॉबी नहीं। हॉबी इसको, अभी किसको हॉबी कहते हैं ना कोई–2 को, किस्म–2 की हॉबी होती है– सत्ता करने की, धंधा करने की, बाइस्कोप में जाने की, क्या करने की। ये अभी बच्चों को हॉबी है बाप को याद करने की। दूसरी खिटपिट वगैरह में कोई फायदा नहीं है। पहले–2 है अपनी कमाई। वो है याद की। कोई से भी कोई रूठता है, पढ़ाई छोड़ देते हैं, सेन्टर पर आ न जाते हैं, ब्राह्मणी ऐसी है, वैसी है या भाई लोग तुम्हारे से ठीक नहीं चलते हैं या ये ठीक नहीं है, फिर नहीं आते हैं। नहीं आते हैं, नहीं चलते हैं, उनको घाटा लगता है। एक तो पढ़ाई नहीं करते हैं, दूसरा– याद में नहीं रहते हैं। कोई भी गफलत करते हैं या बेकायदे चलन चलते हैं, नहीं यहाँ सेन्टर में क्या जाकर करेगा। सेन्टर में क्या नहीं जाकर करेगा, अगर ऐसे खयालात आए, रूठे, फलाना हुए, तो योग भी नहीं लगेगा, समझा ना; क्योंकि फिर सज़ाएँ भी मिलती रहती हैं; क्योंकि बाप आए हैं अभी सारी दुनिया को पावन बनाने के लिए, खास बच्चों को, जो बिल्कुल ही खाक हो गए हैं काम चिक्षा पर जल करके; क्योंकि सबसे तुम खाक हुए हैं बच्चे जो ब्राह्मण बनते हैं। उनको तो ज़रा भी कोई गफलत नहीं चाहिए। रूठना,वूठना,सूठना, बहुत बच्चे..रूठने की आदत होती है। ब्राह्मणों से रूठे, बापदादा से भी रूठते हैं बहुत ही। बाप से रूठे तो दादा से रूठे; दादा से रूठे तो बाप से रूठे। ये तो हैं जोड़ी और बहुतों को पता नहीं पड़ता है देहअभिमान के कारण। बाकी नहीं तो ये दशहरा फलाना–2, ये तो अभी के त्यौहार हैं ना। बाप ने आज समझाया ना बच्ची कि ये सब जो भी हैं, इस समय जो कुछ होते हैं, पीछे भक्तिमार्ग में त्यौहारों में काम में आते हैं..। ये रावण की अभी बाबा ने समझाई ना, तो इस समय का सब कुछ है। जो रामायण और ये महाभारत वगैरह की बात, ये अभी की बात है। जो फिर ये किताब–विताब बनते हैं, उनका नाम रख देते हैं। ये सब भक्तिमार्ग का। समझा ना! है, ड्रामा में है। कोई ऐसे नहीं कि नहीं

है। अभी बाप समझाते– अभी तुम समझ गए कि ये क्या है भक्ति। होनी ज़रूर है। फिर भी होगी; परन्तु मनुष्यों को कोई भी पता नहीं है– ज्ञान क्या है? भक्ति क्या है? भक्ति के पीछे ज्ञान कौन देते हैं? किसको भी पता नहीं....। ये सभी शास्त्र वगैरह का यही ज्ञान समझ लेते हैं। जो बहुत पढ़ा जाता है उनको अथॉरिटी कहा जाता है– ज्ञान की अथॉरिटी और ज्ञान पाई का नहीं। है भक्ति की अथॉरिटी। भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं। तो भक्तिमार्ग के शास्त्र भी संन्यासी को नहीं पढ़ना है। बिल्कुल नहीं। अधिकार नहीं; क्योंकि वो तो गृहस्थी तो हैं नहीं। जो गृहस्थियों की रसम–रिवाज़ सो फिर ....निवृत्तिमार्ग वाले, उनका बिल्कुल नहीं। सब घुस जाते हैं। कोई कायदा–कानून कुछ नहीं। जब ऐसी हालत होती है, कोई कायदा–कानून कुछ नहीं, तो बाप आते हैं, ये कचड़–पट्टी खतम कर देते हैं। सब ठगी–4, संन्यासी–उदासी, ये जो भी मनुष्य मात्र, सिवाय ठगी के कोई बात ही नहीं है। नहीं तो बच्चे समझ गए ना, ये सभी कर्मकाण्ड जो हैं भक्तिमार्ग के, सब उनके गुरु हैं। एक व्यापारी में गुरु, कोई ने वाढ़ा बनवाया, उसको भी गुरु कहते हैं– इसने मुझे सिखलाया, ये हमारा गुरु है। वाढ़ा बनाया, ...जो भी कुछ बनाया, उनको भी गुरु कह देते हैं और ये जो फिर संन्यासी वगैरह, ये जो हैं फिर शास्त्र पढ़ने वाले, ये भक्तिमार्ग के गुरु। इनको कभी भी सद्गति देने वाले गुरु नहीं कहा जाए। ये सब दुर्गति देने वाले हैं। अगर ऐसा न होता तो भगवानुवाच– बच्चे, अभी अपने गुरुओं को छोड़ो, गोली मारो। ये ऐसे ही शास्त्रों में लिख देते हैं, कोई गोली–वोली मारने की नहीं है। वो तो जब बेहद का बाप मिला, बेहद का सद्गुरु मिला तो फिर ये भक्तिमार्ग वालों को क्या करेंगे। तो दुर्गति का मार्ग वो छुड़ाय लेते हैं यानी आपे ही छूट जाते हैं। किसको कहना नहीं होता है कि भक्ति नहीं करो। नहीं, ये तो जब अच्छी तरह से समझ जाए, तब वो आपे ही समझ जाए कि बरोबर ये जो यहाँ लिखा हुआ है दुर्गति, ये दुर्गति मार्ग तो उतरने की है ना। हाँ अच्छा, चलो बच्ची। (रिकॉर्ड बजा– रे पंछी) क्या पीछे चलेगा, ... जैसे चलता है। ये अभी 5 मिनट में, 7/10 मिनट में आ जाएगा और बोलने शुरू कर देंगे। (रिकॉर्ड बजाः– कि अब ये देश हुआ बेगाना, चल उड़ जा रे पंछी) भूत जिसको कहा जाता है ना, बिल्कुल अपने ही लिए करते हैं। जो करेगा सो अपने लिए करते हैं। न करेगा तो खुद अपना धोखा खाएगा, पीछे पछताएँगे; क्योंकि खाता तो एकदम साफ देख लेंगे ना। हाँ, ऐसे मत समझो, कोई नहीं। जो–2 भी बेकायदे काम करते हैं, वो अभी जो पिछाड़ी होगा ना, सब उनके सामने आ जाएगा। साक्षात्कार करते जाएँगे, शरीर मिलते जाएँगे, सज़ाएँ खाते रहेंगे। इस समय में तो अपनी बिल्कुल ही सम्भाल करनी है। कोई से लटकना, झगड़ना, खिटपिट नहीं करना है। कोई भी यज्ञ सर्विस में धोखा डाला और मरा एकदम। बड़ी कड़ी सज़ा है।..यज्ञ को धोखा दिया या कुछ नुकसान किया या ट्रेटर बने या कोई को नुकसान पहुँचाया, बड़ी कड़ी सज़ा है। बच्चे अपने 84 जन्म की कहानी सुनाय सकते हैं। ऐसे दुनिया भर में कोई भी मनुष्य नहीं होगा, जो अपने 84 जन्म की कहानी बैठ करके सुनावे। तुम बच्चों को 84 जन्म की (...), अभी 84 जन्म की कहानी, ऐसे तो नहीं हो सकता है कि एक–एक जन्म में क्या करते हैं, सारा, 20 कि 25 कि 40 बरस में, वो तो नहीं सुनाना होता है ना। 84 जन्म हम कैसे लेते हैं– ये कोई भी दुनिया में नहीं (...); क्योंकि एक तो दुनिया में समझते हैं– 84 लाख योनि। फिर भी 84 लाख में समझते हैं कि एक मनुष्य का अमूल्य रतन जीवन मिलते हैं, फिर चक्कर लगाते हैं; क्योंकि 84 जन्म में, एक–एक जन्म सबका लेंगे, मनुष्य का भी तो और जनावरों का भी। अभी वो भी तो राँग है और मनुष्य ही सिर्फ 84 जन्म की आखानी सुनाय सकते हैं, जनावरों की तो कोई बात ही नहीं है, उसका तो कोई है नहीं कुछ। यहाँ तो बहुत ये रावण की लड़ाइयाँ फलाना, कितना किताब बनाया, उनमें कोई जनावरों की तो बात है नहीं कुछ। तो तुम एक–एक बच्चा अपने

84 जन्म की कहानी किसको भी सुनाय सकते हो। बोलो– ये देखो, अभी हम ब्राह्मण हैं। ये है अमूल्य जीवन। अभी इस समय तुम्हारी ईश्वरीय वंशावली है; क्योंकि ईश्वर यहाँ भी है। तो यहाँ ईश्वरीय वंशावली, वंशावली कहा जाता है कि ईश्वर है, ब्रह्मा है, बच्चे और बच्चियाँ हैं और वहाँ जब हैं अपने घर स्वीटहोम में, तब तो सभी बच्चे ही बच्चे हैं और बाप है। यहाँ तो बहन–भाई भी हैं ना। तो फिर इसको ईश्वरीय घर भी कहा जाए। यह(यहाँ) तो बहन–भाई भी हैं। वहाँ तो सिर्फ भाई–भाई। यहाँ तो ईश्वर, फिर बाप, फिर बच्चे, पौत्रे–पौत्री। वहाँ तो पौत्रे–पौत्री तो नहीं होंगे ना। तो इसको ही कहा जाता है ईश्वरीय घर इस समय में। समझा ना! ये ईश्वरीय घर, बाबा यहाँ आया हुआ है और यहाँ (...)। वहाँ तो कोई वर्सा नहीं लेंगे ना बच्ची। जो भाई और बहन वहाँ मूलवतन में होंगे, तब तो कोई वर्से–2 की बात नहीं उठती है ना। बाप से वर्से की बात यहाँ उठती है। वहाँ तो नहीं उठेगी ना। वहाँ तो कोई बात की बात भी नहीं है, वहाँ तो साइलेन्स है। तो ये समझने की बात है यहाँ, बाबा यहाँ है, हाज़िर है और बच्चों को वारिस बनाय, सिखलाय, पढ़ाय भी रहे हैं। वहाँ मूलवतन में तो नहीं पढ़ाएगा, वहाँ तो शांत है। तो वहाँ शांतिधाम छोड़ करके यहाँ देखो बाप पढ़ाने आते हैं बच्चों को। तो बाप पढ़ाने आते हैं बच्ची, ये सिर्फ तुम बच्चों को याद होवे तो भी तुम्हारा वो बस खुशी का पारा भी नहीं रहे कि भगवान आय (...)। ये तो साधु–संत, वो भी तो अपन को भगवान मानते हैं ना। देखो, भगवान, साईं बाबा, साईं भगवान– आजकल रख देते हैं। तो कोई मनुष्य को ये थोड़े ही मालूम होता है कि ...भगवान पढ़ाते हैं। भगवान कोई, ये सब भगवान थोड़े ही होते हैं। तुमको नॉलेज– भगवान पढ़ाते हैं हमको और क्या पढ़ाते हैं भगवान? क्योंकि तुम बच्चों को याद रखना चाहिए, भगवान से, जो स्वर्ग का वर्सा देते हैं, उनसे वर्सा मिलते हैं और भारत को वर्सा मिला हुआ था शिवबाबा से। बस, दूसरा कोई भगवान हो ही नहीं सकते हैं। तो आजकल देखो सब मान लेते हैं, कोई भी चरिया–खरिया और एकदम पता नहीं क्या है इन लोग के– हमारा साईबाबा फलाना, भगवान–3, ये भी भगवान, ये भी भगवान और भई चरिये मनुष्य ये भी नहीं समझते हैं, अच्छा सर्वव्यापी है तो हम भी भगवान, तुम भी भगवान। जिधर देखो...सब भगवान के ही रूप हैं ना। तो जब हैं ही सभी भगवान के रूप, तो किसको फिर क्या कहें। तो बहुत मूँझे हुए हैं। इसलिए तुम बच्चों को कितनी ... समझानी होती है। तुम जानते हो कि हम 84 जन्म का चक्कर लगाय अभी वापस घर जाते हैं। तो हूबहू जैसे कोई छोटे ड्रामा के एक्टर्स होते हैं ना, तो जभी ड्रामा पूरा होता है तो आपस में मिलेंगे। कितना बजा है अभी? बाकी 15 मिनट हैं, अभी नाटक पूरा होगा और हद का हुआ ना बच्ची। अभी चलेंगे हम घर। सब कोई अपने–2 घर चले जाएँगे। और तुम्हारा तो सबका फिर घर एक। अभी तुम सब आत्माएँ चले जाएँगे अपने घर। .....बेहद की बातें बेहद के बाप बैठ करके समझाते हैं। ये बातें कोई मनुष्य तो समझाय भी न सके। .....तो ये भी तो मनुष्य है ना। तो जब ये कहते हैं मनुष्य न समझाय सके, तभी कौन समझाय रहे हैं? अरे भई, इसमें समझाने वाला बैठा है। इस डबली में हीरा पड़ा हुआ है। हीरे जैसा बनाते हैं ना। तो हीरा वो तो नहीं है ना बच्चे। देखो, जब अंगूठी भी बनाते हैं नवरत्न की तो हीरा बीच में डालते हैं। तो यहाँ कहेंगे ना भई, हीरा इसके बीच में बैठा हुआ है, जो तुमको हीरे जैसा बनाते हैं। अभी कोई हीरा–वीरा तो नहीं है ना, ये तो बाप बैठा हुआ ना, तो इनकी महिमा का ही ये सभी अक्षर होते हैं। तुम आत्माओं को कौड़ी...से हीरा बनाते हैं, प्योर बनाते हैं। तो होता क्या है ... प्योर बनकर चला जाना है; परन्तु पार्ट है सबका अलग–अलग। इस समय में कोई बहुत अच्छा योग से प्योर बन जाते हैं। कोई में वो डालते हैं ना हीरे में। तुम वास्तव में हो हीरा। रफ हो गए हो एकदम। देखने में भी आते हैं हीरा, जैसे तुम रफ पत्थर देखा (है) ना। तुम जो पत्थर देखेंगे ना हीरे के भी, तो बोलेंगे– ये क्या,

ये तो काँच का टुकड़ा है। काँच भी चमकता है। कभी हम तुमको दिखलाएँगे, कोई हीरा जो होता है ना, जभी खान से निकलता है..., कैसा निकलता है? बिल्कुल जैसे एकदम रफ, डल, चमक भी नहीं कुछ। डल वो पत्थर। कोई टेढ़ा, कोई बाँका, कोई कैसा, पत्थर जैसे। चमक कुछ भी नहीं। पीछे सिलान पर चढ़ाते हैं, फिर चमक निकलती है। तैसे तुम भी पत्थर हो गए हो। तुम थे सच्चे हीरे; पर तुम माया के कारण पत्थर (...)। अभी तुमको यह ज्ञान, योग और ज्ञान से सिलान पर चढ़ा रहे हैं। पीछे देखो, तुम हीरे जैसा जन्म बन जाते हो। गायन भी तो है ना। तो बच्चों को बहुत फखुर होना चाहिए। औरों को आप समान बनाने की युक्ति करनी चाहिए और बहुत अच्छा, पवित्र, दैवीगुण वाला यहाँ चाहिए तुम बच्चों को। देखना है, जाँच करनी है, मेरे में कोई दैवी (...), कभी कोई वक्त में बिगड़ तो नहीं जाता हूँ, कोई गुस्सा तो नहीं आता है, करता हूँ...। फिर यहाँ गरीब ये माताएँ बहुत हैं, कन्या बहुत हैं, बहुत ऊँचा पद पाती हैं। पुरुष बड़ा थोड़ा पद पाय सकते हैं। ये देखो, वो संन्यासी लोग हैं ना, ये इस समय में इनकी बहुत बड़ाई है। अरे, ये भी आजकल ये माताएँ–वाताएँ प्राइम मिनिस्टर अभी बनी हैं। नहीं तो क्या था मान! कोई स्त्रियाँ को मान थोड़े ही रखते थे। ये तुम्हारा गुरु है, ईश्वर है, तुम्हारा सब कुछ यही है, बस। वो जैसे कि घर की एक दासी बन जाती है। अभी देखो बाप आते हैं। तुम शक्ति दल द्वारा भारत का दरवाज़ा/गेट्स खोलते हैं। बाबा ने कहा है ना, वो संन्यासी कहते हैं कि ये माताएँ नर्क का द्वार हैं। तुम कहते हो– नहीं, माताएँ स्वर्ग का द्वार है। वो तभी तो दिखलाया ना– द्रौपदी पुकारती है–"मुझे दुःशासन (...)"। तो दुःशासन हुआ ना नर्क का द्वार खोलने वाले और नर्क का द्वार भी पुरुष ही खोलते हैं। क्या समझा? हाँ, स्त्रियाँ नहीं खोलती हैं कभी भी। वो पुरुष ही खोलते हैं। उनमें होती हैं बहुत, देखो अबलाओं के ऊपर भी अत्याचार तो इनका होता है ना। कोई एकर–बेकर होंगी और हैं पूतनाएँ। तो हूबहू, तुम जानते हो कि जैसे वो लिखा हुआ भागवत में, महाभारत में, हूबहू खेल वही चल रहा है। पूतनाएँ भी हैं, सूपर्णखा भी हैं, बहुत पतियों को सताती हैं। बिचारे बहुत आ करके बाबा को कहते हैं। कहते– बस, जैसे डायन है एकदम। कल भी एक जगह से रिपोर्ट आई थी– बाबा, मुझे बहुत (...), मैं कभी क्रोध नहीं करता हूँ। मैं क्या करूँ! मुझे गुस्सा, लगाया चमाट, लगाया चमाट, तो वो भी हमारे गले फँस गई, हमको ठूँसा मारने लगी। हमारी लड़ाई हो गई। बच्चा, आज मेरे पास, कल चिट्ठी आई थी ना। तो उनको ये विख नहीं मिलते हैं, तो अंदर में बुखार आते हैं। तो नाम गाया हुआ है ना– भई पूतनाएँ–सूपर्णखाएँ। फिर उनके लिए भी हैं– जरासंधी, शिशुपाल, दुर्योधन, दुःशासन। ये सभी नाम हूबहू अभी, तो रिपीट हो रही है अभी; परन्तु कृष्ण–वृष्ण नहीं है। ये सभी बातें नहीं। ये तो बाप है, बैठ करके समझाते हैं बच्चों को और बच्चों को बाबा कहते हैं याद रख देना, घर में रहते हो, करते हो, बिल्कुल एकदम जैसे कि हमारा शरीर नहीं है, हम तो आत्मा हैं, हमको अभी घर जाना है। ये क्या है, ये सब पुरानी छीः–2, क्या प्यार करना है! ऐसे आना चाहिए। इसको कहा जाता है–वैराग्य, नफरत। उनको नफरत आती है ना घर से, भाग जाते हैं। तो ये फिर है बेहद की नफरत। देखते रहते हैं.., नहीं, हमको तो अपना शांतिधाम और सुखधाम याद आते हैं। ये क्या है यहाँ, ये सब बन्दरों की, ये सब बन्दरों का, ये जंगल है, ये सब क्या है। है एक–एक को, यहाँ जो बच्चे हैं, तो भी बन्दरों से काम पड़ा, तोड़ निभाना है इनसे भी; क्योंकि अभी बाकी थोड़ा रोज़ इकट्ठा ही रहना है। बाप भी कहते हैं– बच्चे, तोड़ निभाते रहो; नहीं तो बड़े बिगड़ जाते हैं। भाई–2 का प्रेम नहीं रहते हैं, बच्चे बाप का प्रेम नहीं..., बस, पवित्रता का नाम सुना और बिगड़े एकदम, निकाल देते हैं, घर से भी बाहर निकाल देते हैं। स्त्री विकार न दे तो घर से बाहर निकालो; क्योंकि हमने शादी किया विख के लिए, बाँधी हुई (है) देने के लिए। ...बहुत दुनिया खराब है, बहुत गंदी।

बड़ी खबरदारी भी चाहिए। एक तो बड़ी खबरदारी चाहिए, दूसरा– देहअभिमान बिल्कुल नहीं चाहिए। घड़ी–2 याद, घड़ी–2 याद, मुझे पतित से पावन, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना ही है कुछ भी कर–करके। अच्छा कुछ भी करके, तो कोई वो मेहनत थोड़े ही देते हैं। याद करना है। जिस बाप के साथ तुम घर में रहते हो। बाप कहते हैं– तुम रहते थे। तुम पहले, हम तुमको भेज दिया था। पीछे चक्कर लगाया है, अभी छीः–2 बने हो। अभी चलो गुलगुल बनने के लिए। मेरे को याद करो, और तो कोई नहीं और बहुत मीठे बनो। क्रोध–व्रोध तो ज़रा भी नहीं आना चाहिए, बिगड़ना कभी नहीं चाहिए, कोई भी बात में नहीं। अगर कोई कुछ कहे– तो डोण्ट टेक लॉ इन यूअर ओन हैंड– ऐसे कहा जाता है। समझा ना! कोई कुछ कहे, तो उसके कहने दिओ, पर तुम भी नहीं कह दो। बाप बैठे हैं। समझा ना! समझो कि दो आदमी यहाँ लड़ते हैं। तो उसने ठूँसा मारा, उसने मारा। पकड़ लेंगे पुलिस। जाएँगे वहाँ, हमको इसको(इसने) ठूँसा मारा। तो रिपोर्ट करना था ना। तुमने क्यों लॉ अपने (...), तुमने क्यों ठूँसा मारा? तुम्हारा काम है रिपोर्ट करना– बाबा, फलाना, जज साहब, इसने हमको ठूँसा मारा है। अगर तुमने भी मारा तो फिर तुम तो अपने हाथ में लॉ लिया कि जाओ...इसकी सज़ा हम उसको ही दे देते हैं। फिर मेरे पास क्यों आए हो? तो ऐसे नहीं तुम लोग को आपस में (...), नहीं, कोई भी कुछ कहे, ऐसी कोई बात हो, तो बाबा को लिख देना चाहिए। नहीं तो आजकल के बच्चे, अच्छे–2 बच्चे, बात मत पूछो। बाबा जानते हैं अच्छी तरह से, सिर्फ नाम नहीं लेते। नहीं तो बड़े बिगड़ते हैं। थोड़ी भी कोई अच्छा वो अपने अण्डर देखते हैं ना, तो उनसे बड़े लिवाज़ से बात करते हैं; क्योंकि वो महारथी है, वो घोड़ेसवार है या प्यादा है, तो उनको आँखें बहुत दिखलाते हैं, कम–जास्ती बोलने में देरी नहीं करते हैं। कोई–2 जो सेन्टर के बड़े भी होते हैं, ... भी होते हैं ना, बात मत पूछो। हमारे हुकुम पर चलना होगा। हम जैसे कहें तैसे करना होगा। ऐसी–2 धमकियाँ देते हैं। तो ये भी तो नहीं करना है बच्ची। आए हो, उनको प्रेम से खिलाना है। कभी भी कोई के ऊपर क्रोध नहीं करना है। नहीं बच्चे, तुम क्या जानो, बाबा जानते हैं; क्योंकि ऐसे बाबा किसका नाम भी लेवें ना, फिर वो और ही जास्ती ट्रेटर बन जावे। बाबा हर एक की बातचीत करने से, भला वो समझते हैं ये बिगड़ने में देरी नहीं करेगा। मैं ब्राह्मणियों को इशारा दे देता हूँ, खबरदार रहना! इस आदमी की सम्भाल रखना, ये कोई भी वक्त में बिगड़ने में देरी नहीं करेगा। ट्रेटर भी बन जाएगा। इसलिए बड़ा युक्ति से, प्यार से इससे तोड़ निभाना। ऐसे बहुत हैं सेन्टर्स। तो बाबा समझा देते हैं कभी भी क्रोध या बिगड़ना, कुछ भी करना, बाबा की निंदा कराएँगे। तभी गाया हुआ है ना, इसी बात के लिए गाया है– बाप की जो निंदक, बाप,टीचर,गुरु (...)। वो तो कहते हैं गुरु का निंदक ठौर न पाए। यहाँ तो बाप,टीचर,गुरु– तीनों का निंदक स्वर्ग की ठौर न पाए। क्यों मुर्दों के पास क्या रखा है जो कहते हैं गुरु की निंदक? अरे, बिचारी ऐसी फँसी हुई हैं। पुरुष नहीं इतना फँसते हैं, कोई–2 बुद्धू पुरुष फँसते भी हैं। परन्तु नहीं, माताएँ तो इतनी फँसती हैं। गुरु का नाम बताओ। हमको मना है। मंत्र बताओ। हमको मना है। पता नहीं पीछे गुरु श्राप दे देवें, क्या कर दें। इतनी डरती है, बात मत पूछो। गुरु से जभी पूछो ना– तुम घरबार कैसे छोड़े, इतना हमको बताओ, असुल कौन थे? ये–2 ऐसी बात मत करो, ऐसी बात बंद करो और हमारे पास कोई आता था, हम तो पहले बोल दिया– वो तुम बताओ तो मैं भी समझूँ ना, तुमने कैसे घर छोड़ा, तो मैं भी ऐसे ही छोडू ना। तुम बताओ– कैसे घर छोड़ा, तो मैं भी ऐसी युक्ति करूँ। .....हम फिर कैसे तुमको मानेंगे, मैं खुद फिर बिगड़ जाता उनसे। हमने बोला– कुछ बताते ही नहीं हैं। ऐसे बताते नहीं हैं और मन में है कि अब ये डर पड़े। बहुत डराते हैं। अभी कोई को मालूम तो है नहीं। तुम जानते हो कि सत् गुरु, सत् बाबा, सत् टीचर की अगर निंदा

कराएँगे तो बरोबर सतयुग में ऊँचा पद नहीं पाएँगे; क्योंकि तुम यहाँ आए हो सतयुग का पद पाने के लिए। तो बच्ची, श्रीमत पर कदम–2 पर चलना ज़रूर; नहीं तो गिरा एकदम, मरा एकदम, ठाबा खाया, गिरा और बहुत गिरते हैं, बात मत पूछो। अच्छे–2 हाँ, 20–20, 25–25 गिरते हैं एकदम। फिर तरस पड़ते हैं ना बच्ची। तो देखो, कितना समझाते हैं, समझते नहीं हैं। अभी श्रीमत पर न चलते हैं तो क्या बिचारे का हाल होगा! अच्छा, चलो बच्चे। .....वो कुछ समझ नहीं सकते हैं। जो मैं हूँ, जो मैं पद देता हूँ, वो साकार स्वरूप में होने कारण मूँझ पड़ते हैं घड़ी–घड़ी। नहीं तो क्या करूँ? किसके तन में आऊँ? विचार की बात हो गई ना। मैं आता ही हूँ, मुझे आना ही है उनमें, जो पहले नम्बर में था और उनको पहले नम्बर में जाना है, तो मुझे(मैं) उसमें ही प्रवेश करूँगा। पहले ही उनको सुनना है, नम्बरवन। ....सुनाऊँ किसको? जिन्हों को कल्प पहले सुनाया है, उन्हीं को सुनाएँगे। सो उसी समय सुनाएँगे जबकि कल्प के संगम का युग होगा। कोई युगे–2 तो नहीं आता हूँ। तो संगम के युग की निशानी भला क्या? निशानी वो महाभारत की लड़ाई, मूसल। बड़े–ते–बड़ी निशानी बिल्कुल ही। यादव, कौरव और पाण्डव क्या करत भये? यादवों ने मिसाइल्स निकाला और भई (...)। अच्छा, बस ये निशानी तो है ना, महाभारत की निशानी। तो महाभारत की निशानी खड़ी है। ज़रूर होगा गीता का भगवान। पर कौन है गीता का भगवान? यहाँ कृष्ण की तो बात ही नहीं है। तो घोर अंधियारे में हैं। चलो मीठे बच्चे! (म्युज़िक बजा) ....जैसे कि बड़ा युग है। हिसाब के अनुसार यह युग छोटा है। बाबा आते ही हैं कल्प के संगमयुग। संगमयुग तो छोटा ही होता है; परन्तु यह युग सब युगों से वैल्युबल है। छोटा है बस। समझा ना! तो ये जो युग कहते हैं, ये 5 युग हैं। यह है संगम, पुरुषोत्तम युग। तो यह तो सबसे ऊँचा हुआ; क्योंकि पुरुषोत्तम या पुरुषोत्तम बनते हैं जो सतयुग में पुरुषोत्तम होते हैं। कहाँ से बने? वो तो जो जहाँ से बने, वो युग ऊँचा हुआ ना। तो बच्ची ये है, इसको कहा ही जाता है– ऑस्पिशयस, कल्याणकारी युग। तो 5 युग, उसमें भी नम्बरवन ये युग। इसको सवाई नहीं कहा जाता है। बाबा सिर्फ कहते हैं कि ये छोटा है; परन्तु वास्तव में ये छोटा नहीं है, ये बहुत बड़ा है। समझा ना! तो इसलिए कोई बाबा की मुरली से कहाँ ऐसे नहीं मूँझे कि बाबा ने इनको सवाई रख दिया है। परन्तु नहीं, इसकी महिमा अपरम्पार है और ये भी कोई को मालूम नहीं, नहीं तो समझते भी हैं, प्रजापिता ब्रह्मा का नाम है गाया हुआ; परन्तु वो प्रजापिता ब्रह्मा (...)। फिर ये जानते भी हैं कि ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है ब्राह्मणों की। कौन करते हैं, फिर ये कुछ समझ में नहीं आता है कोई को। नहीं तो बाप ने समझाया है कि ब्रह्मा द्वारा मैं ब्राह्मण धर्म की स्थापना भी करता हूँ। उन ब्राह्मणों को फिर सूर्यवंशी और क्षत्रिय धर्म में ले आता हूँ। ये है कहाँ गायन शास्त्रों में; परन्तु वो मनुष्य समझते (...), समझें कैसे। .....बिल्कुल नहीं समझेगा। सब उनको देखते हैं कि उनको मालूम पड़े कि ये जो लिखते हैं, ये सारा सबसे बरखिलाफ लिखते हैं। तो बिल्कुल बरखिलाफ लिखने से भी डंडा मारने में देरी नहीं करते हैं। हाँ। आजकल पत्थर तो कोई भी मार (सके), किसको भी छेड़ो, तो पत्थर मारने में देरी नहीं करते हैं। सिकीलधे रूहानी बच्चों को, रूहानी बच्चों को कौन, रूह कहेगा ना, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का दिल व जान, सिक और प्रेम से नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार और गुडनाइट।